10

बच्चों से बातचीत और उनसे बनी कविताएँ

रितिका श्रीवास्तव*

यह लेख पूर्व-प्राथमिक पाठशाला के बच्चों की बातचीत से रची गई कविताओं पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य बच्चों के मौखिक भाषायी विकास को बढ़ावा देने के लिए बातचीत की भूमिका को रेखांकित करना है। लेख यह दर्शाता है कि बच्चे बिना किसी भय के और सहजता से अपने अनुभवों को कक्षा में साझा करते हैं। अधिकतर बच्चे अपने अनुभवों, जिज्ञासाओं, अवलोकनों, अनुमानों, समझ, कल्पना और ज्ञान को विषयवस्तु के इर्द-गिर्द प्रस्तुत करते हैं। वे अपने पूर्व-ज्ञान को विभिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं, लेकिन यह शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह बच्चों के इस ज्ञान को किस प्रकार शैक्षणिक संरचना में समाहित करता है। कविताएँ बच्चों की बातचीत उनके अनुभवों, कार्य-कारण संबंधों, अवलोकन, तर्क और आशावादी दृष्टिकोण को उजागर करती हैं। बच्चे न केवल अवलोकन करते हैं, बल्कि अपनी समझ को सभी के साथ साझा भी करते हैं। शिक्षक, अभिभावक या अन्य लोग जो बच्चों के साथ काम करते हैं, उनसे अपेक्षा है कि वे बच्चों से और बच्चे उनसे सीखें। सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की बातचीत को सहज तरीके से कक्षा और विद्यालओं में शामिल किया जाना चाहिए।

बातचीत और मौखिक भाषा

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 बच्चों के मौखिक भाषा विकास के विषय में बताती है कि 0–8 वर्ष के बच्चों में मौखिक भाषा का विकास बहुत तेजी से होता है। मौखिक भाषा के विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की कक्षा, घर और वह सभी स्थान या लोग जहाँ विद्यार्थी जाना या रहना पसंद करते हैं, उन सभी स्थानों पर और लोगों के बीच बच्चे अपनी बातचीत, अनुभव और अपने क्रियाकलापों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर सकें। यह लेख पूर्व-प्राथमिक पाठशाला के बच्चों और अध्यापिका के बीच हो रही बातचीत पर आधारित है। ये बच्चे पूर्व-प्राथमिक पाठशाला भोपाल की एक 'बालबाड़ी' के थे। अवलोकन के दौरान मैंने यह देखा कि बच्चे कविता, कहानी व गतिविधियों से जुड़ी तरह-तरह की चर्चाओं में भाग ले रहे थे। वे अपनी समझ के अनुसार

*पीएच.डी. शोधार्थी, विद्यालय ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, हैदराबाद 501 510

अध्यापिका से सवाल कर रहे थे और अपने विचार भी प्रस्तुत कर रहे थे।

मैंने स्वयं भी यह अनुभव किया कि बच्चे उन्हीं स्थानों पर अपने को खुश और सहज महसूस करते हैं, जहाँ वे बिना किसी दबाव या डर के अपनी बात रख पाते हैं। मैनें देखा कि बच्चे कक्षा में बहुत तरह की बातचीत कर रहे थे। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में यह भी देखा गया कि बच्चे विषयवस्तु से संबंधित अपने अनुभव, जिज्ञासा, अवलोकन, अनुमान, समझ, कल्पना और ज्ञान प्रस्तुत कर रहे थे। वे अपने पूर्व-ज्ञान को अलग-अलग प्रकार से प्रस्तुत कर रहे थे, परंतु यह अध्यापक पर निर्भर करता है कि वे बच्चों के ज्ञान को किस प्रकार ज्ञान संरचना के प्रयोग में लाते हैं। अक्सर यह भी देखा गया है कि अध्यापक स्वयं के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अन्य कारकों की वजह से बच्चों के अनुभव और समझ से संबंध नहीं बना पाते हैं और पाठ्यपुस्तक अथवा स्वयं के ज्ञान के आधार पर बच्चों को नई विषयवस्तु समझाने की कोशिश करते हैं। अक्सर विषयवस्तु पढ़ाते समय हम यह मान कर चलते हैं कि बच्चे हमारे अनुभवों से विषयवस्तु को समझें और उसमें अपनी गहरी रुचि भी दिखाएँ। जब बच्चे अपने पूर्व-ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान या थोपे हुए ज्ञान से संबंध नहीं बना पाते हैं, तो हम यह मान लेते हैं कि अमुक बच्चा कमजोर है या उसे कम समझ में आता है। कुछ अध्यापक तो यह भी मान लेते हैं कि बच्चा पढ़ता ही नहीं है और आजकल बच्चों की कमजोरी को अभिभावक या परिवार वालों के ध्यान न देने के कारण से भी अक्सर जोड़ दिया जाता है।

बच्चों की बातचीत को कई भाषाविद भाषा के विकास में बहुत अहम मानते हैं। यह हमारी प्रवृत्ति है कि हम कम बोलने वाले बच्चे को बोलने और बातचीत करने के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि दूसरी तरफ अधिक बात करने वाले बच्चे को कम बोलने और सोच-समझ कर बात करने के लिए कहते हैं। बातचीत में व्यस्त बच्चे लगभग इन क्रियाओं को करते नजर आते हैं—

- अपने-अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हुए;
- दूसरे के अनुभवों के बारे में चर्चा करते हुए;
- अनुभवों के आधार पर तर्क करते हुए;
- पिछले किसी अनुभव को याद करते हुए;
- दूसरे की भावनाओं व उनके अनुभवों की कल्पना करते हुए।

इन संकेतों के आधार पर शिक्षक बच्चों के संज्ञानात्मक और भाषायी कौशलों को उड़ान दे सकते हैं, जिन बिंदुओं पर बच्चों का ध्यान न जा रहा हो, उस ओर ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। उनके अनुभवों को आकार दे सकते हैं और उनमें समानुभूति का भाव विकसित कर सकते हैं।

बच्चों की बातचीत से रचित कविताएँ

उदाहरण के तौर पर, इस लेख में लिखी कविताएँ बच्चों की बातचीत से ही उपजी हैं इनसे उनके विचार, जुड़ाव, तर्क, जीवन को देखने के तरीके उजागर होते हैं। साथ ही बच्चे जिस तरह से सवाल करते हैं, अपनी बात रखते हैं वह यह दर्शाता है कि हम सभी को बच्चों से जुड़ने के लिए अपने अनुभवों पर पुनर्गठन

या पुनःकार्य करने की आवश्यकता है। इन कविताओं से यह पता चल रहा है कि बच्चे बड़ों को अपने बारे में बता पा रहे हैं, चित्रों और कविताओं पर अपनी बात रख रहे हैं।
जैसे—

मैंने जब भी नाम पूछा*
बच्चा बोला "क्यू"
मुझे लगा वह कह रहा है
मैं क्यों अपना नाम बताऊँ?

'क्यू' क्यों करके
एक दिन बीता
एक दिन बीता, दो दिन बीते

तीसरे दिन मैडम थीं साथ
मैंने पूछा नाम क्या है?
बच्चा बोला 'क्यू'

मैडम बोली बता रहा है
नाम वह अपना "क्यू"
इसका नाम 'क्यू' पाल है
तो नाम हुआ न 'क्यू'।

दूसरा उदाहरण—एक दिन बच्चों के साथ प्रदूषण और उसके कारणों पर बातचीत हो रही थी। बच्चों के साथ हुई बातचीत पर एक कविता बन गई जो इस प्रकार है—

लोग पेड़ को काटते हैं
पेड़ कटने से होता है प्रदूषण

अपन नहीं जानते प्रदूषण
अपन नहीं समझते प्रदूषण
अपन तो बस इतना जानते हैं
छोटे पौधे, छोटी घास
अपन के पैर से दबते हैं
तो फिर खड़े हो जाते हैं

पेड़ कटे तो फिर उग न पाए
इसीलिए कोई न काटो पेड़

तीसरा उदाहरण—किसी एक और दिन बच्चों के साथ चाँद-तारों पर बातचीत हो रही थी। उस बातचीत को आधार बनाते हुए बच्चों ने जिस कविता का सृजन किया वह इस प्रकार है—

उस कविता का चाँद
बस खिड़की से दिखता है

खिड़की नहीं है अपन के घर में
पर चाँद अपन को दिखता है

रोड से दिखता है, अपन का चाँद
चलो तो संग है, अपन का चाँद
ये देखती, इसका चाँद
अपन देखता, अपन का चाँद
सबके पास है, सबका चाँद।

*यह कविता डॉक्टरल थीसिस— टीचिंग प्रैक्टिसेज ऑफ अर्ली चाइल्ड केयर एंड एजुकेशन (ई.सी.सी.ई.) प्रैक्टिशनर्स— एन एक्सप्लोरेटरी केस स्टडी (अनपब्लिश्ड डॉक्टोरल थिसिस), पाठ-4

बातचीत का विश्लेषण

बच्चों की बातचीत से उपजी उपर्युक्त कविताओं को यदि ध्यान से देखें और समझें तो पाएँगे कि हमने बच्चों के नामों को भी अपने अनुभव के आधार पर इस तरह से सोच रखा है कि किसी बच्चे का क्या नाम हो सकता है और क्या नहीं? जबकि बच्चा खुद बता रहा है कि उसका नाम क्या है, फिर भी हम अपने अनुभवों के आधार पर बच्चे से जुड़ने में समय लेते हैं और बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ नहीं पाते हैं। इस प्रक्रिया में हमें विचार करना चाहिए कि हमने बच्चों के नाम के विषय में अपनी जानकारी के आधार पर हाशिए पर रहने वाले बच्चों और उनके बचपन को कहीं अनदेखा तो नहीं कर दिया?

दूसरे उदाहरण में जहाँ प्रदूषण पर बातचीत हो रही थी वहाँ बच्चे उस ओर ध्यान दिलाते हैं जिस ओर बड़ों का ध्यान कभी नहीं जाता है और बच्चे चीजों को बारीकी से देखते हैं, जैसे — छोटे पौधे, छोटे घास को अपने पैर से दबाते हैं तो वे फिर खड़े हो जाते हैं और पेड़ों की कटाई होने पर पेड़ दुबारा नहीं खड़े हो पाते हैं। वे नैतिकता और पर्यावरण के बीच संबंध जोड़ते हुए दिखाई देते हैं, जो बच्चों में कार्यकारण संबंध की समझ के विकास को दर्शाता है। बच्चे सरल भाषा में कहते हैं कि किसी भी जीवित चीज को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए और वे नाश की बजाय जीवन की ओर इंगित करते हैं, जो उनकी आशावादी और नैतिक सोच को दर्शाता है। बच्चे अवलोकन, विश्लेषण तथा तर्क प्रस्तुत करते हैं और कक्षा में अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं।

तीसरी कविता जहाँ चाँद-तारों पर बातचीत हो रही थी उसमें बच्चे अपने अनुभव प्रस्तुत करते हैं। बच्चे अपने अनुभवों को समेटते हैं, अध्यापिका के निरीक्षण को चुनौती देते हैं। जैसे, जब अध्यापिका कविता के माध्यम से खिड़की से चाँद देखने पर सवाल करती हैं, तो वे बातचीत करते हैं और कहते हैं, "चाँद देखने के लिए खिड़की की जरूरत नहीं है, हम सड़क से देख लेते हैं।" बच्चे दूसरों के अनुभव और अपने अनुभवों का अवलोकन करते हुए वैज्ञानिक तर्क के आधार पर यह भी समझते हैं और साझा करते हैं कि चाँद हर जगह, हर किसी को दिखता है। वे समझते हैं और यह भी साझा करते हैं कि चाँद को देखने के लिए किसी एक निश्चित स्थान पर खड़े होने या रुकने की ज़रूरत नहीं है। यह सब दर्शाता है कि बच्चे स्वयं अवलोकन करते हैं, जिन्हें वे साक्ष्यों के आधार पर प्रस्तुत भी कर पाते हैं। बच्चे जो समझते हैं, उसे बताना और साझा करना चाहते हैं। बस उनके इस स्वभाव को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक काम है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों से बात करें, उनसे संवाद करें और उन्हें सुनें।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 1996. *बच्चे की भाषा और शिक्षक— एक निर्देशिका*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

श्रीवास्तव, रितिका. 2024. टीचिंग प्रैक्टिसेज ऑफ अर्ली चाइल्डहुड केयर एजुकेशन (ई.सी.सी.ई.) प्रैक्टिशनर्स : एन एक्सप्लोरेटरी केस स्टडी. टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, हैदराबाद.